वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन में सुदूर संवेदन अनुप्रयोग”
पर प्रशिक्षण एवं कार्यशाला

भू पारिस्थितिकी तंत्र अनुसंधान एवं प्रशिक्षण प्रभाग (ईआरटीडी)

वेदास अनुसंधान समूह (वीआरजी), एप्सा, दिनांक: 19-23 अगस्त, 2019

“वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन में सुदूर संवेदन अनुप्रयोग” विषय पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में भारत के 17 संस्थानों/संगठनों के 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

“वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन में सुदूर संवेदन अनुप्रयोग”

दिनांक : 19-23 अगस्त, 2019

पृथ्वी पारिस्थिति तंत्र में प्रशिक्षण एवं अनुसंधान

वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन में सुदूर संवेदन अनुप्रयोग के विविध आयामों को कवर करते हुए कुल 17 व्याख्यान दिए गए। सुदूर संवेदन के व्याख्यानों में प्रकाशीय और तापीय सुदूर संवेदन, ईओ अनुप्रयोग, प्रतिबिंब प्रसंस्करण, प्रतिबिंब वर्गीकरण तकनीक आदि के मूल सिद्धांत शामिल थे। अनुप्रयोगों में मैंग्रोव आवास मानचित्रण एवं मानीटरन, वन्य जीव संसूचन, जैव शारीरिक विशेषताएँ, वन ऊर्जा संतुलन एवं प्रवाह मानीटरन, दावाग्नि आदि शामिल थे। वन, अल्पाइन पारिस्थितिकी तंत्र, वन घटनाविज्ञान और 3डी वानिकी के लिए एसएआर सिद्धांत एवं अनुप्रयोग भी शामिल थे। वन्यजीव आवास मॉडलिंग, वनस्पति प्रतिदीप्ति का सुदूर संवेदन विषय पर प्रस्तुति दी गई। मूंगे की चट्टान अभिनिर्धारण, मानचित्रण, मूंगे की चट्टानों को नुकसान की चेतावनी प्रणाली आदि पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। पर्यावरण और जलवायु पर चर्चा करते हुए, हिमालय तथा ध्रुवीय क्षेत्रों की हिम और हिमनदों के मानीटरन, वायु गुणवत्ता मानीटरन, ग्रीन हाउस गैसों की पुनर्प्राप्ति विषयों पर प्रस्तुति दी गई। मरुस्थलीकरण निर्धारण, आर्द्रभूमि मानचित्रण, जल प्रदूषण और जलवैज्ञानिक प्रणालियाँ भी शामिल की गई। मूलभूत भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), वेब-जीआईएस के क्षेत्र में इसके अनुप्रयोग, मोबाइल एप्लिकेशन का प्रयोग कर सत्यापित डेटा एकत्रण, वेदास प्रदर्शन आदि प्रदर्शित किए गए। प्रतिभागियों को 12 घंटे का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया गया जिससे वे पढ़ाए गए सिद्धांतों को अच्छी तरह समसकें। प्रतिभागियों ने संबंधित अनुसंधान क्षेत्रों में इसरो के साथ कार्य करने की तीव्र इच्छा दर्शायी।

उद्घाटन के दिन लिया गया ग्रुप फोटो